भट्टारक ज्ञानभूषण

जीवन-परिचय : ज्ञानभूषण नाम से 4 आचार्यों का परिचय जैन साहित्य में मिलता है। हम यहाँ चर्चा कर रहे हैं—भट्टारक भुवनकीर्ति के शिष्य भट्टारक ज्ञानभूषण की।

भट्टारक ज्ञानभूषण गुजरात के रहने वाले थे। इनके व्यक्तित्व के बारे में शुभचन्द्र-पट्टावली में विशेष वर्णन मिलता है। भट्टारक भुवनकीर्ति के पश्चात् ज्ञानभूषण सागवाड़ा के पट्ट पर आसीन हुए थे और विक्रम संवत् 1557 तक इस पद पर रहे। भट्टारक ज्ञानभूषण का समय विक्रम संवत् 1500 से 1562 है।

रचना-परिचय : भट्टारक ज्ञानभूषण ने संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में रचनाएँ लिखी हैं। संस्कृत रचनाएँ—

1. आत्मसम्बोधन काव्य : आत्मसम्बोधन आध्यात्मिक कृति है। इसकी प्रति जयपुर के शास्त्रभंडार में संग्रहीत है।

2. तत्त्वज्ञानतरंगिणी : इस ग्रन्थ में 18 अध्याय हैं और 536 पद्य हैं। ग्रन्थ में शुद्ध चैतन्यस्वरूप का वर्णन करते हुए ध्यान, भेद-विज्ञान, अहंकार-ममकार का त्याग, रत्नत्रयस्वरूप, शुद्ध चैतन्य का विस्तार से विवेचन किया है।

3. पूजाष्टक : इसमें भक्तामर पूजा, श्रुतपूजा, सरस्वतीपूजा, शास्त्रमंडल पूजा, ऋषिमंडल पूजा, पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा आदि की टीका है। समस्त कृति दस अधिकारों में विभक्त है। यह विक्रम संवत् 1528 में लिखी गयी है।

हिन्दी रचनाएँ :

1. आदीश्वर फाग : इस कृति में आदितीर्थंकर का जीवनचरित वर्णित है। इस कृति में 239 पद्य संस्कृत में और शेष 262 पद्य हिन्दी में लिखे गये हैं।

2. पोसह रास : यह रास कर्म सिद्धान्त पर आधारित है। इसमें 53 छन्द हैं, और षट्कर्मों के पालन करने का सुन्दर उपदेश है।

3. जलगालन रास : इसमें जल छानने की विधि का वर्णन है।